उस हसीन चेहरे व चरित्र को सलाम

अगस्त मास आते ही उस हसीन चेहरे व वातसल्य की मर्ति की मधुर यादों भरी स्मृतियों की रील चित्त पर उभरने लग जाती है। गम्भीरता व रमणीकता का बखूबी संतुलन लिये जीवन की यादें तरोताज़ा हो जाती हैं। न जाने इस हसीन चेहरे ने चरित्र के माध्यम से कितनों के उजरे जीवन को चरित्रवान बनाकर उनके जीवन को भी हसीन बनाया होगा! ये कहना बहुत मुश्किल है। किन्तु मैंने ये देखा है और उनके सानिध्य में रहने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। दादी जी के जीवन के जैसी सरलता आज भी किसी और में

- ब्र. कु. गंगाधर

ढूंढ़ने से मिलना मुश्किल सा लगता है। दादी की सहृदयता इतनी निश्छल और निर्मल थी जो सहज ही हरेक के साथ वे दिल से जुड़ जाती थीं।

दादी जी ने परमात्मा की शिक्षाओं को इतना अंगीकार किया जो कि परमात्मा और महात्मा के मध्य अंतर करना भी मुश्किल लगता है। मुझे याद है, एक बार ज्ञानसरोवर अकादमी में संत-महात्माओं के त्रिदिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जहाँ दादी जी ने अपना सम्बोधन महात्माओं के सामने रखते हुए कहा कि असत्य क्या है, झूठ क्या है, यह मैंने कभी जाना ही नहीं। मेरे जीवन में इसकी अविद्या ही रही। 'सत्य है तो जीवन है' यही मेरे जीवन का मूल मंत्र रहा। जब ऐसा सम्बोधन सभी महात्माओं ने सुना तो वे आश्चर्यचकित हो गये। चारो ओर अजीब से, लेकिन सुखद एवं शांति के प्रकम्पन जैसे हॉल में फैल रहे थे और सभी को सुकून की अनुभूति हो रही थी। दादी की इस निखालस और निर्मल वाणी ने जैसे कि चारो ओर वातावरण को खुशनुमा बना दिया।

उसी वक्त मैं ओमशान्ति मीडिया न्यूज़पेपर के लिए रिपोर्टिंग कर रहा था। मेरे हाथ भी उस झलक की सुखद अनुभूति में थम गए।

दादी जी का दिल इतना विशाल था, कि वे सब के लिए सहज ही सदा उपलब्ध रहती थीं और सबके भावों को भी जान लेती थीं और सबकी आवश्यकताओं को भली-भांति पूर्ण करती थीं। मैंने देखा, उनके हृदय में सबके प्रति प्रेम, सबको आगे बढ़ाने का उत्साह सदा ही बना रहा।

दादी जी को हमेशा ये ध्यान रहता था कि सभी अपनी-अपनी विशेषताओं से आगे बढ़ें तथा बाबा के बेहद यज्ञ को सुचारू रूप से चलायें। बीच-बीच में स्व-उन्नति के प्रोग्राम का आयोजन करना, ये उनकी बहुत बड़ी खूबी थी। वे अपने उद्बोधन में हमेशा कहती थीं कि परमात्मा के इस भगीरथ कार्य को खुशी-खुशी से आगे बढ़ाना है।

मैंने दादी जी को एक कुशल प्रशासिका के रूप में देखा। दादी के प्रशासन करने का तरीका आज के परिवेश से बिल्कुल ही भिन्न था। सबको प्रेम से उनकी योग्यताओं के अनुरूप चलाना उनकी खूबियाँ थीं। दादी जी को हमेशा यह ख्याल रहता था कि बाबा को प्रत्यक्ष करना है। उसी संदर्भ में वे चाहती थीं कि बाबा के कार्य में लाखों लोग आयें और बाबा के अवतरण का संदेश लेकर जायें और परमात्मा के कार्य को समझें।

दादी जी की परख शक्ति गज़ब की थी। दादी ने, जब यज्ञ के विशाल प्रोजेक्ट ज्ञानसरोवर के निर्माण का कार्य आरंभ करना था तो दादी ने मुझे कहा कि आपको यहाँ की व्यवस्था को सम्भालना है। जबकि मुझे तो निर्माण के संबंध में कुछ जानकारी नहीं थी, कोई अनुभव नहीं था, ना ही ऐसी मुझमें कोई स्किल थी। दादी जी ने मुझपे भरोसा जताया और वह परमात्मा का प्रोजेक्ट समयबद्ध पूर्ण भी हुआ। दादीजी की दूरदर्शिता एवं पारदर्शिता इतनी थी कि वो चाहती थीं कि इस महायज्ञ में जो भी कुछ होता वो हर कोई जाने, समझे और समझपूर्वक अपना सहयोग दे। दादी जी एक-एक ऐसे विशाल प्रोजेक्ट को सर्व के सहयोग से पूर्ण करती थीं। कभी भी सेवा के बड़े से बड़े प्रोजेक्ट खेल खेल में पूर्ण हो जाते थे, किसी को विशेष कार्य के भारीपन का बोध ही नहीं होता था।

दादी जी किसी भी त्योहारों के आते ही उस त्योहार के आध्यात्मिक रहस्य को बतातीं भी और सबको इसका महत्व भी समझाती थीं। जैसे कि रक्षाबंधन का त्योहार आते ही सबको पवित्रता की राखी बांधना और सबको वरदान देकर उसका उमंग-उत्साह बढ़ाना, ये तो दादी की फितरत में था। मुझे दादी को बहुत करीब से देखने, जानने व समझने का अवसर प्राप्त हुआ। दादी जी के हर कार्य में अलौकिकता नज़र आती थी। यज्ञ कारोबार की कैसी भी बातें हों, लेकिन दादी बड़े शांत और हल्के रहकर निवारण करती रहीं। आज जो हम इस संस्था के विशाल रूप को देख रहे हैं, ये दादी जी के योगदान और उनकी दूरदर्शिता का ही परिणाम है। आज विशेष रूप से उनकी दसवीं पुण्य स्मृति दिवस पर उनकी स्मृतियाँ जैसे कि रील की तरह मानस पटल पर आती जा रही हैं। उनके जीवन से सीखकर अपने जीवन को भी धन्य बनायें, यही सच्चे अर्थों में उनकी पुण्य तिथि को मनाना व उनके प्रति हमारी सच्ची स्नेहांजलि होगी।

जहाँ पड़े कदम, वहाँ रचा इतिहास

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

भारत पाकिस्तान के बँटवारे के समय जब हमारा सिन्ध से माउण्ट आबू आना हुआ तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं, किन्तु दादी को हमने सदा ही हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प या बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वर्से का अधिकारी बनाया।

प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मज़बूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएं भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनाएगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली चलाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का मुख्य केन्द्र था ही। उन दिनों पूरे चार साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियाँ हमारे पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आई। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा

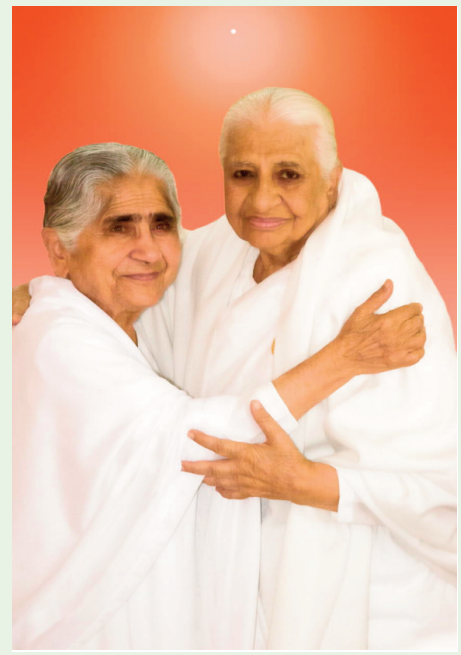

ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नैचुरल रुहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था। यह मेरा महान भाग्य है कि दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परंतु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के नये बीज अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई।

जब दादी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था तब भी उनका मुस्कराता हुआ चेहरा देख, कर्मातीत स्थिति की प्रेरणा मिलती रही। चेहरे पर ज़रा भी दु:ख, चिंता की लहर नहीं दिखाई। जैसा बाबा हमें बनाना चाहता है, वो सबूत देखा। वे याद में भी लवलीन रहती थीं और सर्व का सहयोग लेने की बड़ी सुंदर युक्ति उनके कर्मों से देखने को मिलती थी। संक्षेप में यही कहूंगी कि बाबा की हर आज्ञा का पालन करते-करते दादी, बाप समान सबकी प्रेरणास्रोत बन गई।

दादी का कहना, जीवन चला जाए पर खुशी नहीं

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

हमने दादी को शुरु से ही साकार बाबा के साथ यज्ञ के हर कार्य में हाथ बंटाते हुए देखा। साकार बाबा की तरह ही दादी ने भी इस यज्ञ को उसी रीति-रस्म से आगे बढ़ाया। जिस प्रकार कोई भाई बहन गलती करने के बाद हिम्मत करके यदि बाबा के पास चले जाते तो बाबा उनको बड़े प्यार से बिठाते थे और टोली खिलाते थे। उसी तरह दादी जी के पास भी जब कोई आता था तो दादी जी बड़े प्यार से उससे बात करती थीं। दादी जी कभी किसी की गलती याद नहीं दिलाती थीं। गलती करने वाले को स्वयं ही अपनी गलती की इतनी महसूसता होती थी कि वो स्वयं से ही प्रण करता था कि मैं कभी इस गलती को नहीं दोहराऊंगा। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई, तो दादी कहतीं कि कोई बात नहीं, आप छोटे हैं ना और वो बड़ी हैं, तो आज आप थोड़ी देर के लिए खुद को बाबा के साथ रखकर देखो कि आपको कैसा लगता है। दादी जी ऐसे प्यार से छोटी-छोटी बातें करके बहलाती थीं, लेकिन उस बड़ी बहन को कभी उलहना नहीं दी कि तुमने ऐसा क्यों कहा। उसे बहुत प्यार देकर उसके मन को ठीक कर देती थीं। दादी जी क्लास भी कराती थीं और सब कायदे कानून भी समझाती थीं। लेकिन व्यक्तिगत मिलन में सीधा ऐसे नहीं कहतीं थीं कि तुमने ऐसा किया। दादी कहती थीं कि बाबा ने कहा है कि जीवन भल चला जाए पर खुशी न जाए। हमारी दादी जी सबके दिल की प्यारी और अति न्यारी, सर्व के दिलों में प्यार की, रहम की और सहयोग की छाप लगाने वाली सर्वस्नेही थीं। दादी हम सभी ब्राह्मणों के दिलों में समाई हुई हैं। दादी देहातीत अवस्था को प्राप्त कर चुकी थीं, इसलिए उन्हें बीमार होते भी सदा शांत व हर्षित देखा। इसलिए उन्हें दु:ख का रिंचक मात्र भी छू नहीं पाया, ये कमाल हम सभी महसूस करते थे। दादी सभी को शिक्षा देती थीं कि पेशेन्ट होते हुए पेशेन्स की स्थिति में रहना क्या होता है। दु:ख की लहर तो स्वप्न मात्र भी नहीं थी, क्योंकि ब्राह्मण जन्म से ही दादी ने पुरुषार्थ में कोई कमी नहीं की। दादी हमेशा कर्मातीत अवस्था की धुन लगाई हुई थीं। बाबा ने भी इसलिए कहा था कि ये मेरी एकदम सहयोगी, स्नेही और समान बच्ची है, उसकी दिल रखनी ही थी। वे सदा निर्विघ्न, स्वमानधारी, सम्मानधारी मूरत होने के कारण किसी भी विघ्न के वश नहीं हुईं। सदा विजयी रहीं। दादी जी के साथ बिताया हुआ हर एक क्षण मधुर स्मृतियों से भरा हुआ है। वे कोई बात बोलती थीं और थोड़ी देर बाद हमने देखा कि वे साइलेंस में चली जाती थीं। जब दादी से कोई कहता कि दादी आपने ये काम करवाया तो दादी थोड़ी देर तक तो सुनती रहती थीं, उसके थोड़ी देर बाद अंगुली ऊपर इशारा करके कहती थीं कि ये काम बाबा ने कराया। करनकरावनहार बाबा है, मैं तो निमित्त हूँ। दादी जी सबकी विशेषताओं का वर्णन बहुत अच्छे तरीके से करती थीं। जब कोई भी पार्टी आती थी बाबा से मिलन मनाने तो वे उस पार्टी के लिए स्पेशल इंतज़ाम कराती थीं, उनके लिए पूछती थीं कि आज भंडारे में क्या बना है, उनके हिसाब से अलग-अलग बाबा के भोग बनवाती थीं। हमें भी उनका बहुत रिगार्ड है, हम उनके अंग-संग रहे। हमें उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। दादी जी हमारे बीच में अपनी शिक्षाओं के माध्यम से आज भी उपस्थित हैं और सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही हैं।